औषधि विज्ञान में ध्वनि की उपयोगिता

Nandlal Chaurasiya

Sanskrit Department, Allahabad University, Allahabad

Abstract

Sound is a medicine to express emotion of organism. Infact it is multi dimensional concepts such as descriptive, satirlic and natural etc. Music is a also a type of sound. Samveda deals that musical mantras were the way of prayer and these mantras always provide shanti, sukh and santosh (peace, happiness and satisfaction). These mantras were not only the way of prayer to please spiritual power but general people also got sound mental and physical health. Music used as medical therapy in so many diseases such as coma, fever, eye problem, weakness and shake biting too, Samveda proved it.

Modern science also prove the utility of music in so many diseases. Today medical practitioner use it as complementary treatment psychologists also use musical treatment for the patients suffering from obsessive, compulsive diseases. This paper deals the utility and application of music in ancient as well as modern medical era.

ध्वनि एक मात्र ऐसा तत्व है जिसके द्वारा प्राणिमात्र अपने विचार व भावनाएँ व्यक्त करता है। ध्वनि को परिभाषित करते हुए कहा गया है- तारत्वादिधीहेतुः शब्दविशेषः। यथा- उन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे (माघ. स.)। शारीरकमीमांसा में इसे इस प्रकार परिभाषित किया गया है-

ध्वनिर्नाम, यो दूरादाकर्णयतो वर्णविशेषमनधिगच्छतः। कर्णपथमवतरति प्रत्यासीदतश्च तारत्वादिविशेषमवगमयति, इति। यद्यपि ध्वनि तत्त्व का उल्लेख वैदिक साहित्य के समय से प्राप्त होता है तथापि यह उतना ही प्राचीन है जितनी कि मानव सभ्यता। ध्वनि के बहुविध भेद हो सकते हैं, यथा वर्णात्मक, ध्वन्यात्मक, प्राकृत, वैकृत आदि। संगीत भी एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि है। इसकी उत्पत्ति सामवेद से मानी जाती है। 'गीतिषु सामाख्या" इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह सिद्ध होता है कि जिन वैदिक मंत्रों में गीतात्मक थी, जिनके द्वारा संगीत विधिपर्वूक देवताओं की स्तुतियाँ की जाती थीं, वे वैदिक मंत्र साम मंत्र कहलाये। 'समयति सन्तोषयति देवान् अनेन इति' इस व्युत्पत्ति के अनुसार साम मंत्र शांति, सुख और संतोष प्रदान करने वाले सिद्ध होते हैं। एक अन्य व्युत्पत्ति 'स्यति नाशयति विघ्नमिति' के अनुसार साम को विघ्नों का नाशक कहा गया है। चार यज्ञीय ऋत्विजों में उद्गाता का कार्य इन ऋचाओं का गायन करके दैवीय शक्तियों को प्रसन्न करना था। वस्तुतः इनसे न केवल दैवीय शक्तियाँ प्रसन्न होती थीं अपितु वायुमण्डल के परिशोधन के द्वारा ये यजमान के और लोक के मानसिक शारीरिक स्वास्थ्य के लिए परिपोषक स्रोत के रूप में कार्य करते थे। यज्ञ के समय न केवल यज्ञीय सामग्रियाँ उपस्थित रहती थीं अपितु संगीत से सम्बद्ध वाद्ययंत्र भी रहते थे। वस्तुतः सामवेद की परम्परा का विकास ही संगीत के क्षेत्र में हुआ था। महर्षि अंगिरस ने देवकीपुत्र श्रीकृष्ण को जब वेदान्त का उपदेश दिया था तो उन्होंने सामवेद के गायन की विधियाँ भी श्रीकृष्ण को समझायी थीं, ऐसा वर्णन छन्दोग्य उपनिषद् में मिलता है। इस वर्णन के अनुसार दुंदुभि, वेणु और वीणा इन तीन वाद्यों का उपयोग साम गायन के साथ किया जाता था जो श्रोताओं के मानसिक तन्त्रियों को झंकृत करके उनके मानसिक स्वास्थ्य की वृद्धि करते थे। छान्दोग्य उपनिषद् में साम गायन की प्रक्रिया के पांच अंग बताये गये हैं- हिंकार, प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार और निधन। लोकेषु पञ्चविधं सामोपासीत पृथिवी हिंकारोऽग्निः प्रस्तावोऽन्तरिक्षमुद्गीथ आदित्यः प्रतिहारो द्यौर्निधनम् (छान्दोग्य उपनिषद्)। क्रुष्ट, प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी, मंद्र तथा अतिस्वार्थ नामक सामगायन की लय के प्रकारों का उल्लेख भी छांदोग्य उपनिषद् में प्राप्त होता है।

अथर्ववेद में चिकित्सा सम्बन्धी बातें भैषज्य सूक्त में वर्णित की गयी हैं। भैषज्य सूक्त में विविध रोगों के शमन हेतु उपचार बताया गया है। यहां वर्णित है कि ज्वर, कुष्ठ, मूर्च्छा, कफ, श्वास, नेत्र रोग, गंजेपन, शक्तिह्रास, सर्पदंश तथा अन्य विषैले कीड़ों के काटने से उत्पन्न विष को दूर करने में तथा उन्माद जैसे रोगों की चिकित्सा में भी मंत्रों की सहायता से की जाती रही है। प्रस्तुत मंत्र में एक लता को कुष्ठ एवं पलित रोग की निर्वापयित्री बतलाया गया है-

Vinay Bharati

नक्तं जातस्यौषधे रामे कृष्णे असिक्नि च।
इदं रञ्जनी रजय किलासं पलितञ्च यत् ।। (अथर्व. १,२३,१)

ऐसी विद्यायें जो वेद के अध्ययन में उपकारक या सहायक हो वेदांग कहलातीं हैं, इनकी संख्या छः है- छन्द, कल्प ज्योतिष, निरुक्त, शिक्षा और व्याकरण। शिक्षा को वेद का घ्राण कहा गया है- शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य। घ्राण यानी नासिका शरीर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जो शरीर को स्वस्थ रखने में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आलाप संगीत में एक महत्त्वपूर्ण अंग है। पाणिनीय शिक्षा में इस विशिष्ट प्रकार की ध्वनि रूप संगीत के स्वरों के विषय में बताया गया है-

उदात्ते निषादगान्धारावनुदात्त ऋषभधैवतौ।
स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यमपञ्चमाः।।

संस्कृत के तीन स्वरों उदात्त, अनुदात्त और स्वरित में से उदात्त में निषाद-गान्धार, अनुदात्त में ऋषभ-धैवत और स्वरित में षड्ज-मध्यम-पञ्चम अन्तर्भूत होते हैं। संगीतशास्त्र में सात स्वर प्रसिद्ध हैं। यथा -

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः।
पच्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः।।

इनकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है- निषीदति मनोऽस्मिन् इति निषादः। ऋषति बलीवर्दस्वरसादृश्यं गच्छति इति ऋषभः। गन्धार देशे भवः गान्धारः। षड्भ्यो जातः षड्जः। मध्ये भवः मध्यमः। धीमत आगतं धैवतः, पृषोदरादि। पञ्चानां पूरणः पञ्चमः। इन व्युत्पत्तियों तथा संगीत के स्वरों के वर्णन से यह सिद्ध होता है कि महर्षि पाणिनि को संगीत विषयक ज्ञान अवश्य था। नारदीय शिक्षा में भी संगीत के स्वरों आदि के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है-

सप्त स्वराः त्रयो ग्रामा मूर्छनास्त्वेकविंशतिः।
ताना एकोनपञ्चाशद् इत्येतत् स्वरमण्डलम् ।।

वैदिक काल में यद्यपि चिकित्सा का प्रचलन मन्त्रों से था तथापि उस समय संगीत चिकित्सा का विचार शायद प्रादुर्भूत नहीं हुआ था। इसका कारण उस समय इतनी विविध मात्रा में रोगों का न होना था। उस समय यज्ञ आदि कार्यों के सम्पादन से पर्यावरण स्वच्छ रहता था। चारों ओर शस्य-श्यामला धरा का विस्तार था जिस कारण व्याधियों के उत्पन्न होने की संभावना नगण्य थी। जो कोई व्याधियों से ग्रसित भी होता था वह मंत्रों के पाठ तथा योगादि के ध्यान से ठीक हो जाता था। वर्तमान समय की स्थिति उस समय से बिल्कुल भिन्न है। आज जीव जन्तुओं की संख्या बढ़ती जा रही है, हरियाली कम होती जा रही है, यज्ञ का सम्पादन बहुत कम मात्रा में हो रहा है जिस कारण पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इन सब कारणों से विविध व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनसे न केवल मनुष्य अपितु पेड़-पौधे व पशु-पक्षी भी ग्रस्त हैं। उपचार हेतु उपलब्ध विविंध दवाओं के प्रतिकूल प्रभाव की स्थिति में संगीत चिकित्सा को एक महत्त्वपूर्ण उपाय के रूप में देखा जा रहा है। साथ ही वेदों की मंत्र शक्ति पर वैज्ञानिक प्रयोग किये जा रहे हैं। यद्यपि रोग के लक्षण शरीर में उत्पन्न होते हैं, लेकिन प्रायः इसका संबंध मानसिक स्वास्थ्य से होता है। संगीत में चमत्कारिक शक्ति होती है। विश्व के अनेक देशों में आज संगीत चिकित्सा के विभिन्न प्रयोग किये जा रहे हैं। संगीत द्वारा मानव के मन को सान्त्वना देने की शक्ति, आध्यात्मिक विकास के गुणों में वृद्धि की शक्ति एवं संगीत का मनोवैज्ञानिक प्रभाव निश्चित रूप से संगीत चिकित्सा के क्षेत्र में सफलता के सूचक प्रतीत होते हैं। संगीत का मनोभावों से गहन सम्बन्ध है। मन के साथ हमारी समस्त शारीरिक क्रियायें जुड़ी हुई है, अतः संगीतात्मक ध्वनि द्वारा चिकित्सा की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

उस्ताद चाँद खाँ के अनुसार संगीत का मानव के स्वास्थ्य पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। संगीत के तीनों विभागों (स्वर, लय व बोल) और उनके संयोजन में एसे तत्त्व निहित है जिनके द्वारा प्रत्येक रोग की चिकित्सा संभव है। जबलपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध डॉ.वि.वि. गोरे ने पेड़ पौधों पर परीक्षण कर संगीत के चमत्कारी प्रभाव की ओर सबका ध्यान काफी बरसों पहले आकृष्ट किया था। पेड़ पौधों पर संगीत का प्रभाव पड़ता है- यह आज प्रायः समस्त विद्वान मानते हैं। डॉ गोरे का यह कथन - "मुझे विश्वास है कि स्वर चिकित्सा से रोग भी हटाये जा सकते हैं, इस कार्य में अब कलाकार और सरकार दोनों 'कारों' को आगे बढ़ाना चाहिए"- इसके उपयोग को ही बताता है।

भारत वर्ष के कुछ प्रान्तों में गर्भवती महिलाओं को संगीत सुनाये जाने की प्रथा आज भी है। कहते हैं कि बच्चा इससे स्वस्थ एवं निरोगी होगा। पेड़ पौधों के अतिरिक्त पशुओं पर भी संगीतात्मक ध्वनि का परीक्षण किया गया है- "अमेरिका में विशेष रूप से दूध देने वाली गायों पर संगीत का परीक्षण किया गया। गायों को दूध निकालते समय संगीत सुनाया जाता

Vijnana Bharati

था उस संगीत के प्रभाव से गायें पहले से अधिक दूध देने लगी और यही नहीं दुहने के समय वे शांत खड़ी रहती थीं"।[२]

आधुनिक वैज्ञानिकों ने संगीत द्वारा मानसिक रोगों से ग्रस्त रोगियों की चिकित्सा का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इसमें उन्हें सफलता भी मिली है। संगीत के गुणों का वर्णन करते हुए स्व. एस. एन. रातान्जनकर कहते हैं कि लय सुरों के अनुपात में श्वासोच्छ्वास होते रहने के कारण पाचन शक्ति बढ़ती है, जठर शुद्ध रहता है, नींद अच्छी आती है, मन एवं शरीर जागृत रहता है।

भारत में संगीत द्वारा चिकित्सा किये जानेके अनेक प्रमाण उपलब्ध होते हैं। कहा जाता है कि प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरा ने राग 'पूरिया' सुनाकर राजा राजसिंह की अनिद्रा की बीमारी दूर की थी। बैजूबावरा को तानसेन का समकालीन माना जाता है। इससे पता चलता है कि अकबर के समय में भी संगीतात्मक ध्वनि का प्रयोग चिकित्सा में होता था। पं.ओंकार नाथ ठाकुर जी प्रसिद्ध मृदंग वादक कुदऊ सिंह का दृष्टन्त देते हुए कहते हैं "गणेश परण बजाकर प्राण लेने वाले हाथी को अपने वश में कर लिया था।" इस दृष्टान्त से पता चलता है कि मृदंग की ध्वनि से पागल हाथी को ठीक कर लिया गया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी संगीत चिकित्सा की शक्ति को स्वीकार करते थे। उमेश जोशी के अनुसार 'गाँधी जी संगीत चिकित्सा के रूप को भी स्वीकारते थे। जब वह स्वयं एक बार बीमार पड़े थे, उनकी चिकित्सा संगीत के माध्यम से महान संगीतज्ञ मनहर बर्वे ने की थी जिसका उन्होंने प्रमाणपत्र दिया।' मम्मन खाँ लिखते हैं जब मेरे शरीर में कोई व्याधि उत्पन्न हो जाती थी तो किसी किसी अवसर पर मुझे मेरी अवस्था के अनुकूल चाँद खाँ कोई राग सुनाते थे, उदर में किसी प्रकार की विकृति होती तो 'नाद' की तान लेने का ढंग बताते थे जो पेट से ली जाती थी और उसके अभ्यास के लिए कहते, छाती की कोई व्याधि होती तो 'गमक' ही तान का अभ्यास बताते जिसका उद्भव स्थान छाती है और मस्तिष्क की व्याधि नजला जुकाम हो तो बन्दतान बताते जो मुँह बंद करके मस्तिष्क से ली जाती है" अलूतिन नामक तान प्रकार का वर्णन करते हुए उस्तान चांद खाँ साहब कहते हैं "यह अरब की तान है। इस तान के अभ्यास से इतना पसीना आता था कि शीतकाल में भी पसीने से तर हो जाता था और ज्वर महाशय इसे सहन करने की शक्ति न होने के कारण भाग जाते थे।"

उदयपुर राजस्थान स्थित रवीन्द्र नाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के प्रमुख नेत्र चिकित्सक डॉ. आर.एस. जैन ने भी अपने शोध का यह निष्कर्ष दिया कि 'संगीत की कर्णप्रिय ध्वनि न केवल नेत्र रोगियों को प्रफुल्लित करती है अपितु इससे घाव भी शीघ्र भरने लगते हैं।'

भारत के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों में संगीत चिकित्सा के दृष्टांत उपलब्ध होते हैं। अमेरिका के कुछ दंत चिकित्सक तो दाँत उखाड़ते समय भी संगीत का प्रयोग करते हैं। वे विद्युत वाद्ययंत्रों को बजाकर एक विशेष प्रकार की संगीत तरंगे उत्पन्न कर देते हैं जिससे कि रोगी का मन उसी में तन्मय हो जाता है और वह बिना किसी प्रकार के शून्यकारक इंजेक्शन लगाये ही रोगी का दाँत उखाड़ देते हैं। डॉ. वसुधा कुलकर्णी के अनुसार "अमेरिका में लगभग ८०० रोगियों की संगीत द्वारा चिकित्सा की गयी। वायलिन की मधुर ध्वनि अति तीव्र सिर दर्द को १५ मिनट में दूर कर सकती है, हार्पर (वाद्य यंत्र) से हिस्टीरिया का रोग दूर हो सकता है। आस्ट्रिया के प्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री वी.एम.लैजर लैजेरियो ने गठिया की बीमारी का इलाज संगीत द्वारा किया।

उन्होंने यह प्रयोग स्वयं पर किया और स्वर साधना के प्रयोग द्वारा चमत्कारिक ढंग से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। वे कहते हैं कि यदि इसे एक संयोगमात्र मान लिया जाय तो भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि स्वर संगीत की मधुर ध्वनियों का मेरे मनोभावों पर ग सकारात्मक प्रभाव पड़ा, ब्रह्मलीन आचार्य श्रीराम शर्मा सामवेद संहिता की भूमिका में लिखते हैं- इग्लैण्ड के डॉ० मीड और अमेरिका के डॉ० एडवर्ड पोडालास्कीन ने अपने लम्बे शोध का निष्कर्ष यह बताया है कि संगीत से नाड़ी संस्थान में एक विशेष प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न होती है जिसके सहारे मलगत विसर्जन की शिथिलता दूर होती है, मल, मूत्र, श्वेद, कफ आदि मल जब रुक-रुक कर निकलते हैं तो ही विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। डा० एच० वालसे के अनुसार-जुकाल, पीलिया, अपच, यकृत शोध, रक्त चाप जैसे रोगों की स्थिति में शास्त्रीय गायन का अच्छा प्रभाव पड़ता है। संगीत शक्ति से रोगों की चिकित्सा, प्राकृतिक प्रकोपों जैसे- तूफान का थमना, वर्षा का होना इत्यादि अनेक चमत्कारिक सन्दर्भ इतिहास के अध्ययन से प्राप्त होते हैं।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्री अर्थात् एलौपैथी के समर्थ भी संगीत द्वारा चिकित्सा को स्वीकारते हैं। डॉ० लुई पेरमोन

Vijnana Bharati

के अनुसार थायराईड ग्रन्थि न केवल रक्तचाप को नियन्त्रित करती है वरन् प्रेम व सहानुभूति बढ़ाने एवं असामान्य व विकृत स्थिति में ईर्ष्या, द्वेष उभारने में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। थायराईड से निकलने वाले रस स्राव में थायराक्सीन का अनुपात सही होना जरूरी है। इसका संतुलन बिगड़ने से तरह-तरह की भावनाओं सम्बन्धी विकृतियों का भी मनुष्य शिकार हो जाता है। संगीत द्वारा थायराक्सीन के स्राव को नियंत्रित किया जा सकता है। आज आधुनिक चिकित्सा शास्त्री विभिन्न रोगों को मनः-शारीरिक (साइकोसोमेटिक) स्वीकारते हैं। बहुत सी बीमारियों के मूल में चिकित्सा शास्त्री रोगों की उत्पत्ति का कारण शरीर को न मानकर मन को स्वीकारते हैं, जैसे- रक्तचाप की बीमारी, तनाव से उत्पन्न विभिन्न शारीरिक दोष इत्यादि। इस कारण एलोपैथी के समर्थक चिकित्सा शास्त्री भी मने को प्रसन्न रखने के लिए माध्यम के रूप में संगीत चिकित्सा पद्धति के महत्व को स्वीकार करते हैं। यदि मन स्वस्थ होगा तो अनेक बीमारियों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति भारत की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा मानी जाती है। इसको आधार मानकर विभिन्न विद्वानों ने संगीत चिकित्सा पद्धति पर चिन्तन किया है। बनारस के पं० गणेश भागवत शास्त्री, आयुर्वेद और संगीत के ज्ञाता, का मानना है कि 'क्रोध के आवेश में मन प्रक्षुब्ध होने से ज्वर आता है, चित्त व्याकुलन होने से शरीर आकुल हो जाता है। संगीत पत्रिका के अनुसार आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में संगीत का विशेष महत्त्व बताया गया है, आरोग्य के लिए संगीत के स्वरों का उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद के विद्वानों के अनुसार शरीर में वात, पित्त और कफ में असंतुलन ही रोग की उत्पत्ति का कारण माना जाता है। संगीत द्वारा इनमें संतुलन पैदा कर रोगोपचार किया जा सकता है। देवलसूत्र में भी संगीत चिकित्सा का वर्णन प्राप्त होता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी संगीत चिकित्सा पर विचार किया गया है।हंसराज भाटिया भारतीय रागों और रागिनियों का सम्बन्ध विशेष मनोदशाओं से जोड़ते हुए कहते हैं "हर्ष, शोक, विषाद आदि के भाव विशेष रागों से जगाये और प्रबल किये जा सकते हैं और मनोवैज्ञानिक प्रयोग द्वारा संगीत चिकित्साके क्षेत्र में नये आविष्कार किये जा सकते हैं। पी०डी०मिश्र एवं बीना व्यवहार के मतानुसार "संगीत के माध्यम से रोगी की दबी हुई इच्छाओं एवं संवेगों को चेतना के स्तर परलाने का प्रयास किया जाता है। वह नई आशा एवं उत्साह के साथ समस्या निराकरण का प्रयास करता है। उसको संगीत से नई स्फूर्ति प्राप्त होती है तथा संवेगों का दबाव कम होता है। संगीत से रोगी में आशा का संचारेता है, दुःख में कमी आती है तथा शारीरिक क्रियायें सामान्य रूप से कार्य करने लगती हैं।

अन्त में हम श्री रमेश सक्सेना के मत का उल्लेख करते हैं जिन्होंने विभिन्न रागों द्वारा विविध रोगों के ठीक होने को स्वीकारा है। उनके अनुसार-"भैरव कफ बढ़ने से हुए रोगों को ठीक करता है। मल्हार, सोरठ तथा जयजयवन्ती शरीर की ऊर्जा को बढ़ाते हैं और मस्तिष्क को शान्त कर क्रोध को दूर करते हैं। आशावरी से रक्त, वीर्य, कफ इत्यादि के रोग दूर होते हैं। सारंग से पित्त एवं सिर दर्द भीम पलासी, मुल्तानी, पटदीप और पटमंजरी से नेत्र रोग और राग दरबारी से हृदयशूल, हृदय रोग तथा गठिया रोग दूर होता है।" प्रभुशरण मेहता के अनुसार "गठिया रोग में वेदना के शमन हेतु तानपूरे के साथ निम्न स्वर का दो मिनट किया गया दीर्घ स्वरोच्चार अत्यन्त लाभकारी है। 'रे' 'एड्स' के उपचार हेतु "म रे ग, प नि ध" स्वरावली का दीर्घ स्वरोपचार तुरन्त रोगी को शान्ति प्रदान करेगा।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यदि हम संगीतात्मक ध्वनि की इन विशेषाताओं की ओर ध्यान दें और इन्हें क्रियात्मक रूप दें तो हमारे पास चिकित्सा का प्राणकोष विद्यमान है जिसका मूल्यांकन असंभव है। इसके विषय में कहा जा सकता है कि जिस प्रकार मदोन्मत्त गज को कुशल महावत अंकुश द्वारा नियंत्रित एवं वशीभूत कर लेता है उसी प्रकार संगीत भी शरीर एवं मन पर प्रभाव छोड़ता है। लोक में भी मधुर संगीतात्मक ध्वनि से सिरदर्द में कमी, तनाव में कमी, थकान में कमी और ताजगी महसूस करना आदि देखा जाता है। जहाँ ये गीतात्मक वातावरण बना रहता है वहाँ प्रायः मानसिक रोग अपना प्रभाव नहीं दिखा पाते-ऐसा भी लोक में देखने को मिलता है। इन्हीं सारी बातों को समेटते हुए आचार्य उत्तम राम शुक्ल कहते हैं-

दुर्बल रोगी जाहि सुन, भीम पराक्रम होत।
पत्थर पिघले औ बुझे दीपक होत संजोत।।

निष्कर्ष यह है कि वेदों में वर्णित संगीतात्मक ध्वनि का चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगकिये जाने पर चामत्कारिक सफलतायें प्राप्त हो सकती हैं। अनेक रोगों का विनाश एवं जीवनाधायक शक्ति में वृद्धि हो सकती है।

सन्दर्भ :

१. ओंकार नाथ ठाकुर, प्रणव भारती
२. संगीत मासिक दिसं. ७८

Vijnana Bharati